

॥ श्री हनुमान चालीसा ॥

दोहा --

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौँ पवनकुमार ।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार ॥

चौपाई --

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
राम दूत अतुलित बल धामा ।
अंजनिपुत्र पवनसुत नामा ॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा ।
कानन कुंडल कुंचित केसा ॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै ।
काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥
संकर सुवन केसरीनंदन ।
तेज प्रताप महा जग बंदन ॥
विद्यावान गुनी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लखन सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥

भीम रूप धरि असुर संहारे ।
रामचंद्र के काज सँवारे ॥
लाय सजीवन लखन जियाये ।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना ।
लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥

दुर्गम काज जगत के जेते ।
 सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
 राम दुआरे तुम रखवारे ।
 होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
 सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
 तुम रच्छक काहू को डर ना ॥
 आपन तेज सम्हारो आपै ।
 तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥
 भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।
 महाबीर जब नाम सुनावै ॥
 नासै रोग हरै सब पीरा ।
 जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
 संकट तें हनुमान छुड़ावै ।
 मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥
 सब पर राम तपस्वी राजा ।
 तिन के काज सकल तुम साजा ॥
 और मनोरथ जो कोई लावै ।
 सोई अमित जीवन फल पावै ॥
 चारों जुग परताप तुम्हारा ।
 है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
 साधु संत के तुम रखवारे ।

असुर निकंदन राम दुलारे ॥
 अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
 अस बर दीन जानकी माता ॥
 राम रसायन तुम्हरे पासा ।
 सदा रहो रघुपति के दासा ॥
 तुम्हरे भजन राम को पावै ।
 जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
 अंत काल रघुबर पुर जाई ।
 जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥
 और देवता चित्त न धरई ।
 हनुमत सेई सर्व सुख करई ॥
 संकट कटै मिटै सब पीरा ।
 जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥
 जै जै जै हनुमान गोसाई ।
 कृपा करहु गुरु देव की नाई ॥
 जो सत बार पाठ कर कोई ।
 छूटहि बंदि महा सुख होई ॥
 जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा ।
 होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
 तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
 कीजै नाथ हृदय मँह डेरा ॥

दोहा

पवनतनय संकट हरन मंगल मूरति रूप ।

राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप ॥